ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया, शिक्षा एवं युवतियों में उद्दीयमान व्यवहार प्रतिमान

बबिता शर्मा

एम0फिल0, समाजशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, भारत ।

Email : neelusocio@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र ग्राम तथा नगर के मध्य पारस्परिक संबंधों के नवीन प्रतिमानों को प्रस्तुत करता है। ग्राम एवं नगर के अध्ययन समाजशास्त्र में प्रमुख अध्ययन केन्द्रों के रूप में प्रतिष्ठित है। ग्रामीण एवं नगरीय सभ्यताएं एक–दूसरे के विपरीत नहीं है बल्कि एक–दूसरे की पूरक अवश्य कही जा सकती है। ग्रामीण एवं नगरीय समाज गहन रूप से परस्पर अन्तर्सम्बन्धित है। समाजशास्त्र मूलतः नगरीय समाज से जुड़ा विषय माना जाता है। शास्त्रीय समाजशास्त्री मार्क्स, दुर्खीम, वेबर के योगदान मुख्य रूप से नगरीय समाज से सम्बन्धित है। प्रत्यक्ष तौर पर समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों ने अपने अध्ययन की विषयवस्तु के विभाजन को स्वीकार किया हैं जिसमें एक तरफ नगरीय क्षेत्र के अध्ययन तथा दूसरी और समुदाय, जाति या ग्राम्य जीवन में अध्ययन के भेद प्रमुख है।

ग्रामीण समाज पर विचार–विमर्श उतना ही प्राचीन है जितना कि स्वयं ग्रामीण समाज। ग्रामीण समाज की आधारभूत विशिष्टताओं तथा परिवर्तनशील ग्रामीण जीवन की अत्यावश्यक समस्याओं ने प्राचीन मध्यकालीन तथा प्रारम्भिक आधुनिककालीन उत्साही समाज विचारकों की रूचि एवं ध्यान को आकर्षित किया है (देसाई, 1997 : 26)।

1908 में अमेरिकी राष्ट्रपति ने ग्रामीण जीवन अध्ययन के लिए एक कमीशन बनाया था। ओलफ्सन, मॉरर, मेन, हेम्सथासन, गी अर्क एल्टन, स्टेमन, नेश लेवले, बैडन पावेल, ऐशले, पोलॉक, मेटलैण्ड, लेवेन्स्की सीभूम, गोम गिवराड, मिटजन जुबेनविल, स्लेटर, विनोग्रेडोफ इन्स आदि वे कतिपय विद्वान है, जिन्होंने ग्रामीण समाज पर भिन्न–2 दृष्टिकोण से प्रकाश डाला है (देसाई, 1997 : 27)।

प्रस्तावना

इस विषय पर सर्वप्रथम बहुमूल्य रचना थियोडोर रूजवेल्ट द्वारा 1907 में नियुक्त ''ग्रामीण जीवन आयोग'' द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन थी। आगे चलकर इस प्रतिवेदन ने ग्रामीण अध्ययनों के लिए अधिकार पत्र प्रदान किया। धीरे–2 अनेक लेख व पुस्तकें प्रकाशित हुयी और 1980 तक ग्रामीण समुदायों का अध्ययन विकसित अवस्था में पहुँच गया (चौहान, 1888 : 2)।

इस प्रकार 'गाँव' समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र को जोड़ने वाले बिन्दु के रूप में प्रतिष्ठित

हुआ। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भूमी पट्टेदारी लौकिक नियमों की प्रकृति, जाति संबंधी सांस्कृतिक परिवर्तन इत्यादि अध्ययन प्रश्नों के प्रति कुछ प्रशासनिक तथा शैक्षिक अध्ययेताओं का ध्यान आकर्षित किया। मुनरो (1811), मेटकेफ (1832), मार्क्स (1976), बेडेन पावेल (1892) द्वारा किये गये अध्ययनों में ग्राम को बन्द एवं पष्थक व्यवस्था के रूप में चिन्हित किया गया (शर्मा, 1997 : 12)।

ग्रामीण अध्ययन में बेडेन पॉवेल (1892) सबसे पहले ग्रामीण अध्ययन का सुनिश्चित विचार प्रस्तुत किया।

1955 में ग्रामीण अध्ययन तीव्र गति से हुये। श्रीनिवास 'इण्डियाज विलजेज (1955), दुबे की 'भारतीय ग्राम' (1955) तथामैरियट की 'विलेज इण्डिया' प्रकाशित हुयी। मजूमदार की 'रूरल प्रोफाइल' (1958) तथा 'छोर का एक गाँव' (1960), 'विलेज लाइफइन नादर्न इण्डिया (लेविस : 1958), रामकृष्ण मुखर्जी की 'द डायनेमिक्स ऑफ द रूरल सोसाइटी : ए स्टडी ऑफ रूरल बैंगाल (1957), बी0आर0 चौंहान, राजस्थान विलेज (1967), एफ0जी0 बैजी 'कास्ट एण्ड इकोनॉमिक फ्रंटियर : ए विलेज इन हाइलैण्ड उड़ीसा (1958), घूर्ये 'आफ्टर ए सेन्चुअरी एण्ड क्वार्टर लोनी कांड (1957)।

ग्रामीण अध्ययनों के आधार पर पचास के अध्ययनों में कुछ प्रमुख अवधारणाएं उभर कर आयी। जिसमें प्रथम अवधारणा के रूप में ''ग्राम अध्ययन की ईकाई के रूप में स्वीकार किया गया। ग्रामीण अध्ययनों की प्रकृति जाति आधारित थी। बी0आर0 चौहान (1974) ग्रामीण समुदाय में चार प्रकार के अध्ययनों का उल्लेख किया है– (1) एक गाँव और एक जाति (2)एक गाँव अनेक जाति (3) एक जाति और अनेक गाँव (4)अनेक जातियाँ और अनेक गाँव।

इसी प्रकार सामुदायिकता और परम्पराएं, सर्वभौमीकरण तथ स्थानीकरण, संस्कृतिकरण, विलेज आउटवार्ड (Outward) तथा सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में अवधारणाओं के पुनर्ग्रहण को इंगित किया है। उक्त ग्रामीण अध्ययनों की इकाई, प्रकृति तथा प्रवृत्तियाँ बहुआयामी थी, जिसमें कि विभिन्न प्रकार के अध्ययन समाविष्ट थे। यथा एक गाँव का अध्ययन, दो गाँवों के अध्ययन तथा अनेक गाँव के अध्ययन (चौहान : 1974)।

सत्तर के दशक में मुख्य रूप से पुनर्निर्माण से संबंधित नीतियों, ग्रामीण स्वैच्छिक संगठनों, ग्रामीण विकास तथा रूपान्तरण, कृषि विकास तथा कृषक अन्दोलन तथा ग्रामीण समस्याएं जैसे – निर्धनता, ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा एवं विकास इत्यादि विषयों का अध्ययन किया गया। इस प्रकार अस्सी के दशक के अध्ययनों में विषयों की विविधता दृष्टिगोचर होती है (अलेक्जेण्डर : 2000)।

पचास के दशक के ज्यादातर अध्ययन संरचनात्मक थे। सम्पूर्णता को अध्ययन करने का प्रयास था। अस्सी के दशक में सुधार तथा संगठनात्मक कार्यक्रमों एवं आधुनिक प्रवृत्तियों एवं समस्याओं के अध्ययन हुये। इन अध्ययनों में ग्राम–नगर सातत्य का अध्ययन था। यहाँ अन्तर्क्रियात्मक पक्ष महत्वहीन ही रहा। सोरोकिन (1929) जिम्मरमैन (1929) ने भी ग्राम–नगर अन्तर को ही मुख्यतः सन्दर्भित किया है। सबरवाल (1971) ने ग्राम–नगर का गाँव के आधार पर

अवश्य अध्ययन किया किन्तु अन्तक्रियात्मक पक्ष पर अधिक प्रकाश नहीं डाला है। ग्राम–नगर की अन्तर्क्रिया का एक प्रमुख पक्ष अध्ययन से अछूता रह गया है। गाँव से नगर तथा नगर से गाँव के अन्तर्क्रियात्मक अभिव्यक्ति के अध्ययन अनछूए रह गये हैं। के0एल0 शर्मा (1991) एवं दीपांकर गुप्ता (1991) ने ''रूरल–अरबन नेक्सेस की संज्ञा देकर नेक्सेस (Nexus) को संबंधों के समूह के रूप में परिभाषित किया है। बी0आर0 चौहान ने 'रूरल–अरबन आर्टीकुलेशन' (1990) में ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया को आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कषतिक आधार पर विश्लेषित किया है। उन्होंनं तीन गाँवों के अध्ययन के माध्यम से ग्राम–नगर अन्तक्रिया के विभिन्न स्वरूपों को प्रस्तुत कर नवीन अध्ययनों के लिए उपकल्पनाएं तैयार की हैं। मजूमदार ने भी अपनी पुस्तक ''कास्ट क्लास एण्ड कम्युनिकेशन'– में ग्राम–नगर सम्पर्कों, संचार के कारण गोहाना कलाँ गाँव में आ रहे परिवर्तनों को इंगित किया है।

किन्तु वर्तमान में जहाँ ग्राम–नगर अन्तक्रिया दिन–प्रतिदिन की क्रिया बन गयी हैं, शूट्ज (1967) के शब्दों में से अन्तर्क्रिया जीवन संसार में प्रवेश कर गयी है। वहाँ ये अध्ययन किस सीमा तक प्रासंगिक है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। 1988 से 2002 तक ग्राम–नगर से संबंधित मात्र 12 अध्ययन हुये हैं, जो कि इस क्षेत्र में अध्ययन की कमी को दर्शाता है (जोधका एण्ड डिसूजा, 2009 : 126)। नये प्रकार के अध्ययनों में कृषक आन्दोलन राज्य की नीतियों का प्रभाव तथा कृषि के व्यापारीकरण ने 'Network' (संजाल) की अवधारणा को प्रस्तुत किया है।

शिक्षा ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया के माध्यम से गाँव में नवीन मूल्यों तथा प्रतिमानों को प्रस्थापित कर रही है। शिक्षा के माध्यम से ग्राम–नगर से दिन–प्रतिदिन की अन्तर्क्रिया करता है, ये अन्तर्क्रिया ग्रामीण जीवन में प्रविष्ट होती नवीन प्रवृत्तियों को उजागर करती है।

शोध प्रपत्र का उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया का ग्रामीण युवतियों पर प्रभाव तथा उनमें उद्दीयमान होते नवीन व्यवहार प्रतिमानों का विश्लेषण करना है।

अध्ययन पद्धति :–

प्रस्तुत प्रपत्र उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले के बख्शी का तालाब ब्लॉक के रूदही गाँव के अध्ययन पर आधारित है। मजूमदार (1955) ने पचास के दशक में इस ब्लॉक का अध्ययन कर इस क्षेत्र में अध्ययन की सार्थकता को सिद्ध किया था।

गाँव का चयन उद्देश्य परक निदर्शन के माध्यम से किया गया तथा वर्णनात्मक शोध प्रारूप के आधार पर गाँव का सम्पूर्णतावादी अध्ययन किया गया है। तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों श्रोतों के माध्यम से किया गया है। प्राथमिक श्रोत के अन्तर्गत ''फोकसड् ग्रुप डिशकसन'' किया गया है। जिसके आधार पर ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया करने वाली युवतियों का चयन कर उनका व्यक्तिगत साक्षात्कार किया गया है। जिसे शोध में व्यक्तिगत् केस के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के परिमाणात्मक संकलन के स्थान पर गुणात्मक

विश्लेषण पर अधिक महत्व दिया गया है। शोधार्थी द्वारा साक्षात्कारदाता की मानसिक प्रवृत्तियों को चेतनात्मक आधार पर समझकर तथ्यों का गहनतम् विश्लेषण किया गया है। बेबर की वर्स्टेहेन पद्धति के अनुसार प्रत्यक्ष अवलोकनात्मक बोध के स्थान पर स्वानुभूति के माध्यम से शोधार्थी द्वारा स्वयं को उत्तरदाता की स्थिति में रखकर उसकी परिस्थितियों को समझकर गुणात्मक विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र की पृष्ठभूमिः–

प्रस्तुत प्रपत्र एक गाँव के अध्ययन पर आधारित है। यह गाँव लखनऊ से 18 किमी0 की दूरी पर बख्शी का तालाब ब्लॉक के अन्तर्गत रूदही ग्राम राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। मूलरूप से तो यह गाँव मध्यम आकार का गाँव है किन्तु गाँव के पास हवाई अड्डा स्थित होने के कारण कई बड़ी–बड़ी कॉलोनियाँ विकसित हो गयी है जिससे इसका वृहत आकार हो गया है। जिससे कभी–कभी इसके नगर होने का भ्रम होता है। रूदही ग्राम में हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों ही धर्मों के लोग निवास करते हैं। गाँव में आयोजित होने वाली रामलीला को हिन्दू–मुस्लिम एकता का लासाकौल राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त है क्योंकि इस रामलीला के सभी पात्र मुस्लिम होते हैं।

गाँव में हिन्दू धर्म को मानने वाली 16 जातियाँ हैं जिसमें यादव, लोधी, तथा छत्रिय प्रभुत्वशाली जातियाँ हैं। मुस्लिम जातियों में फकीर, हनीफ जागा निवास करती हैं। गाँव में ब्राम्हण नहीं हैं अनुष्ठानिक कार्यों के लिए अन्य गाँव से बुलाये जाते हैं जो कि एक गाँव का अन्य गाँव से संबंध को दर्शाता है।

गाँव की कुल जनसंख्या 2848 है जिसमें महिलाओं की संख्या 1493 तथा पुरूषों की संख्या 1365 है। सम्पूर्ण देश में महिलाओं की संख्या कम है किन्तु इस गाँव में विपरीत आंकड़े परिलक्षित होते हैं गाँव में जातियों के आधार पर टोलों का विभाजन है।

गाँव का मुख्य व्यवसाय कृषि था किन्तु कृषि योग्य भूमि के बड़ी मात्रा में बिक जाने से गाँव में लगने वाली 'बड़ी बाजार' गाँव की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। नगर से अन्तर्क्रिया के कारण गाँव में छोटे–छोटे शॉपिंग मॉल खुल गये हैं जिसने गाँव में 'मॉल कल्चर' को प्रवाहित किया है। गाँव की युवतियाँ नगर की तरह इन मॉल में सामान बेचती नजर आती हैं। ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया ने गाँव में कुछ नगरीय व्यवसाय जोड़ी दिये हैं जैसे– ब्यूटीपार्लर, मोबाइलशॉप तथा इलेक्ट्रानिक्स। इस अन्तर्क्रिया ने गैर–किसानीकरण तथा जातीय गतिशीलता को नयी गति दी है। जैसे ठाकुर जाति के एक व्यक्ति ने बाजार में कपड़ों की दुकान खोली है तथा नाई जाति का व्यक्ति चाय की दुकान लगाता है।

ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया ने रूदही ग्राम में विवाह तथा परिवार को भी प्रभावित किया है। विवाह का परम्परागत् रूप परिवर्तित हो रहा है। हिन्दूओं में दिन में तथा मुस्लिमों में रात में विवाह होने लगे हैं। गाँव में दो मुस्लिम प्रेम विवाह तथा सात हिन्दू प्रेम विवाह हुये हैं। मुस्लिम धर्म में 'रिशेप्शन' गाँव तथा मुस्लिम सम्प्रदाय दोनों के लिए नवीन परिघटना थी। संयुक्त परिवार गाँव की प्रमुख विशेषता हैं किन्तु गाँव में ज्यादातर एकाकी परिवार ही पाये गये हैं।

राजनैतिक प्रभुत्व के अन्तर्गत क्षत्रिय एवं यादव जाति में गुटबन्दी दर्षष्टिगोचर होती है। गाँव में मजबूत शैक्षिक संगठन है। गाँव में एक प्राइमरी स्कूल, जूनियर स्कूल तथा सरकारी इण्टर कॉलेज है। गाँव के आस–पास अनेक प्राइवेट स्कूल तथा तकनीकी शिक्षण संस्थान हैं।

यहाँ पर कुछ प्रमुख व्यैक्तिक केसों के माध्यम से ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया के द्वारा ग्रामीण युवतियों में उद्दीयमान होते व्यवहार प्रतिमानों का विश्लेषण किया गया है:–

ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया के अन्तर्गत 'ग्राम' नगरीय प्रवर्षत्तियों से न केवल प्रभावित हो रहा है, बल्कि दिन–प्रतिदिन का यह बढ़ता सम्पर्क गाँव को एक सहयोगात्मक बदलाव स्वीकार करने के लिए विवश कर रहा है। प्रघटनाशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझे तो यह दिन प्रतिदिन का सम्पर्क ग्रामीण जीवन संसार में प्रवेश कर चुका है। जिसने ग्रामीण समाज में संक्रमणशील स्थिति उत्पन्न कर दी है। ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया ने ग्रामीण समाज की चेतना में स्थित 'ज्ञान के भण्डार' में कुछ तथ्यों को जोड़ने का कार्य किया है। अन्य शब्दों में कहें तो इस अन्तर्क्रिया ने ग्राम को वैज्ञानिकता के धरातल पर ला दिया है। दिन–प्रतिदिन का बढ़ता ''नगरीय सम्पर्क'' ग्रामीण मूल्यों, मान्यताओं, रीतियों, प्रथाओं तथा एक रूढ़िगत कट्टर ग्रामीण संरचना को भेदने लगा है। ग्रामीण समाज परिवर्तित तो नहीं हो रहा है किन्तु ग्राम–नगर की बढ़ती साझेदारी से सहयोगात्मक परिवर्तन अवश्य ग्राम में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ग्राम–नगर के सम्पर्क में आता है, ग्रामीण–नगरीय अन्तर्क्रिया होती है। ग्रामीण लोग तथा नगरीय लोग आपस में एक साझेदारी अर्थ अपने व्यवहार को प्रदान करते हैं। ये अर्थ ग्राम–नगर संबंधों को एक नया आयाम देते हैं। ये नवीनता कहीं न कहीं ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती है तथा ग्रामीण सामाजिक जीवन में नवीन मूल्यों को प्रतिस्थापित करती है। उदाहरण के लिए शिक्षा ग्रामीण–नगरीय अन्तर्क्रिया में एक अहम् भूमिका निभाती है।

शिक्षा दिन–प्रतिदिन की अन्तर्क्रिया के अन्तर्गत आती है। एक गाँव शिक्षा के माध्यम से नगर से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ता है। नगरीय प्रवृत्तियाँ शिक्षा के माध्यम से ही गाँव में प्रवेश करती है। ग्राम से युवा वर्ग उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए नगर को जाता है। ये वर्ग क्रियाशील तथा क्रियात्मक रूप से नगरीय प्रवृत्तियों को स्वयं में समाहित कर ग्रामीण जीवन में प्रविष्ट करता है।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में युवतियों के वैयक्तिक अध्ययन के द्वारा यह तथ्य दृष्टिगोचर होता है कि ग्रामीण युवतियों का जो शहर की ओर आवागमन हुआ है, जिसमें शिक्षा एक उत्प्रेरक का कार्य करती है तथा ग्राम से नगर की यह अन्तर्क्रिया नये सन्दर्भ समूहों को फलित करती है। ये सन्दर्भ समूह सकारात्मक है उदाहरण के लिए इन्द्रवती के केस में वह नगरीय लड़कियों की तरह आगे पढ़ना चाहती थी, परिवार के विरोध के बावजूद उसे पढ़ायी नहीं छोड़ी जिसके परिणामस्वरूप उसने एक अच्छी एवं मजबूत आर्थिक स्थिति प्राप्त कर ली तथा अन्त में उसके परिवारवालों को भी उसके विरोध के आगे झुकना पड़ा। इस प्रकार प्रस्तुत केस में एक सकारात्मक सन्दर्भ दृष्टिगोचर होता है, जिसने समाज में स्वीकृति प्राप्त की।

इसी प्रकार माबिया एवं लक्ष्मी के केस में नकारात्मक सन्दर्भ समूह दृष्टिगोचर होता है। माबिया शिक्षा के माध्यम से नगरीय सम्पर्क में आयी तथा नगरीय लड़कियों जैसा व्यवहार तथा जीवनशैली अपनाने के लिए अपराधी संगति में फंस गयी। जिससे उसकी परिवार तथा समाज दोनों में निम्न प्रस्थिति हो गयी। अत्यधिक विलासिता पूर्ण जीवन जीने की चाह ने उसे वैश्यावर्षत्ति पर मजबूर कर दिया। इसी प्रकार लक्ष्मी ने भी नगरीय जीवन से तुलना कर स्वयं को ग्रामीण समाज में निम्न प्रस्थिति में पाकर घर छोड़ दिया। नगरीय युवतियों की स्वतंत्रता तथा परिवार में उनकी निर्णयात्मक भूमिका ने उसके मन में हीन भावना उत्पन्न की। इस प्रकार प्रस्तुत दोनों केस नकारात्क सन्दर्भ समूह को प्रस्तुत करते है। लक्ष्मी एवं माबिया दोनों ही सापेक्षिक हीनता से ग्रसित थी तथा अपनी ग्रामीण जीवन को परिवर्तित करना चाहती थी। अतः नगरीय मूल्यों तथा जीवन के तरीकों को आत्ससात् करने लगी। नगरीय समाज का सदस्य बनने की इच्छा ने सम्भावित सन्दर्भ समूह का निर्माण किया है।

इसी प्रकार बेबी, रचना एवं सना के केस में ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया के शैक्षिक माध्यम से कुछ प्रकार्यात्मक पक्ष तथा कुछ दुष्प्रकार्यात्मक पक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। शिक्षा एवं नगरीय सम्पर्क ने इन तीनों को जीवन का अर्थ समझाकर समाज में एक सम्भागीय सामाजिक प्रस्थिति प्रदान की, जबकि ये तीनों परित्यक्ता (तलाकशुदा) हैं। जिसके कारण ग्राम समाज मे इनकी विशेष रूप से निम्न प्रस्थिति थी, किन्तु शिक्षा ने आर्थिक मजबूती प्रदान कर समाज में इनकी प्रस्थिति को ऊँचा उठाया है। रचना, सबा दोनों नर्स है जिसने गाँव में उन्हें सम्मानजनक स्थिति प्रदान की। ग्रामीण समाज न चाहते हुये भी समाज में उनकी उपस्थिति को स्वीकार करने को विवश है। ग्रामीण युवतियों की आत्मनिर्भरता में शिक्षा के माध्यम से ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया परस्पर विरोधी तथा एक–दूसरे के पूरक सन्दर्भ समूह का निर्माण करता है।

इस आधार पर ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया एक सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करती है। वही इसके कुछ दुष्प्रकार्यात्मक पक्ष भी दृष्टिगोचर होते है जैसे– अत्याधिक स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्भरता से संघर्ष एवं असमायोजन की समस्याएं दृष्टिगोचर हुयी, जिसका परिणाम तीनों केसों में तलाक के रूप में परिलक्षित हुआ है। इसके साथ ही नगर से सम्पर्क के कारण इनके जीवन में एक हीन भावना प्रवेश कर गयी है, क्योंकि नगरीय समाज में वो स्वयं को उपेक्षित पाती है। इसलिए नगरीय शैली के अनुसार व्यवहार करती है, जिसका परिणाम यह होता है कि ग्रामीण समाज उनकी इस जीवन शैली को स्वीकार नहीं करता और उन्हें कई तरह के सामाजिक विरोधों का सामना करना पड़ता है।

नगर जाने पर नगरीय जीवन शैली का निर्वाह तथा ग्राम आने पर ग्रामीण जीवन शैली का निर्वाह भूमिका संघर्ष की स्थिति को जन्म देता है।

प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि गाँव से निकली लड़कियाँ नगर तक पहुँचते–पहुँचते अपनी वेशभूषा तक बदल लेती है। वे नगरीय युवतियों जैसी दिखने तथा वैसा ही व्यवहार करने का हर सम्भव प्रयास करती है। उनके ऊपर एक प्रकार से दोहरी भूमिका के निर्वाहन का दबाव रहता है। नगरीय संस्कृति में जितना खुलापन है, ग्रामीण संस्कृति का सम्मिश्रण युवतियों में

असमायोजन के रूप में दृष्टिगोचर होता है। ग्रामीण–नगरीय अन्तर्क्रिया इस आधार पर शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण समाज में एक सामाजिक गतिशीलता उत्पन्न कर रही है। ये सामाजिक गतिशीलता कहीं, न कहीं, किसी न किसी रूप में ग्रामीण सामाजिक संरचना को परिवर्तित करने में संघर्षरत् है।

निष्कर्ष

शिक्षा के माध्यम से ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया ग्रामीण युवतियों के जीवन में नवीन व्यवहार प्रतिमान को प्रतिस्थापित कर रही है। युवतियों का बड़ी संख्या में नगर जाना भी नवीन परिणामों को प्रस्तुत कर रहा है। जिसका प्रभाव इनके जीवन, परिवार तथा सम्पूर्ण ग्रामीण समाज में दृष्टिगोचर हो रहा है। व्यक्तिगत रूप से देखे तो ये युवतियाँ नगरीय चमक–दमक से प्रभावित दिखायी देती है। गाँव की सादी जिन्दगी को छोड़कर नगरीय समाज से जुड़ने की चाह कई प्रकार के सन्दर्भ समूहों का निर्माण करती है। जो सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप से फलित होते है। इसके कुछ प्रकार्यात्मक परिणाम उभर कर आते हैं। गाँव की युवतियाँ आत्मनिर्भर हुयी है, नगरीय जीवन शैली उन्हें आकर्षित करती है। जिसके कारण वे स्वयं को नगरीय मूल्यों के अनुसार बदलने के लिए प्रेरित रहती है। शिक्षा ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण युवतियों के जीवन में आत्मनिर्भरता लाती है। जो समाज में उन्हें मजबूत आर्थिक स्थिति प्रदान करती है। ये गतिशीलता समाज में उनकी उच्च प्रस्थिति के मार्ग को खोलती है। पारिवारिक विरोध तथा सामाजिक विरोध उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति को तोड़ नहीं पाते तथा अन्ततः समाज तथा परिवार द्वारा प्राप्त स्वीकृति समाज में सहयोग बदलाव के रूप में घटित होती है।

वहीं दूसरी तरफ ग्राम–नगर अन्तर्क्रिया कुछ दुष्प्रकार्यात्मक परिणामों को उद्घाटित करती है। ग्राम तथा नगर दोनों से अन्तर्क्रिया ग्रामीण युवतियों को दोहरी भूमिका निभाने के लिए विवश करती है। दोहरी भूमिका का निर्वाहन भूमिका संघर्ष को जन्म देता है। ये भूमिका संघर्ष उन्हें ग्रामीण समाज में समायोजित होने में बाधित करता है। यह असमायोजन उन्हें व्यक्तिवादिता की ओर से जाकर एक प्रकार के अलगाव को जन्म देता है। ये अलगाव तथा एकाकीपन उनके जीवन में खालीपन लाता है। जिसका परिणाम वैश्यावृत्ति, तलाक तथा कभी–कभी अहमवादी आत्महत्या के रूप में उभर कर आता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रपत्र ग्रामीण–नगरीय अन्तर्क्रिया के माध्यम से युवतियों में उद्दीयमान होने नवीन व्यवहार प्रतिमानों को प्रस्तुत करता है। यह अन्तर्क्रिया ग्रामीण समाज में एक सामाजिक गतिशीलता उत्पन्न करती है। ये गर्तिशीलता ग्रामीण समाज को संक्रमणशील समाज बनाने में संघर्षरत है।

सन्दर्भ

1. Alexander, K.C. 2000. *Third Servey of Research in Sociology and Social Anthropoly*, Vol.II. Manak Publishers. Pvt. Ltd.
2. Chauhan, B.R. 1974. *Rural Studies: A Trend Report*. A Survey of Research in Social Anthropology (ICSSR). Vol.I. Bombay: Populer Publication.

·1967. *A Rajasthan Village*. New Delhi: Veer Publishing House.

·1990. *Rural – Urban Articulation*. Etawah : A.lC. Brothers house.

·2009. *Rural life : Gross Roots Perspective*. New Delhi : Concept Publishing house.

3. Jodhka, Surinder S., Paul D Souza. 2009. "*Rural and Agrarian Studies*", in Yogesh Atal (eds.), Sociology and Social Anthropology in India (ICSSR[4th] Servey). New Delhi : Person.
4. Majumdar. D.N. 1958. Caste &*Communicationsin an Indian Village.*Bombay : Asia Publising House.
5. Sharma, K.L. 1997. *Rural Society in India.*Jaipur : Rawat Publication.
6. Singh, Yougendra. 1994. *Modernization of Indian Tradition* (*A Systamatic Study of Social Change*). Jaipur : Rawat Publication.
7. Soja. W. Edward. 1969. "Rural-Urban Intraction". *Special Issue; Rural Africa. Cannadian Association of African Studies.* Vol. 3, No. 1, pp.**284-290.**
8. चौहान, बी0आर0. 1988. *भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र.* इटावा : ए0सी0 ब्रदर्स.
9. देसाई, ए0आर0. 1970. *भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र.* (अनु. हरिकृष्ण रावत). नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन.
10. मजूमदार, डी0 एन0 1958. *कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन्स इन एन इण्डियन विलेज.* बम्बई : एशिया पब्लिशिंग हाउस.
11. शर्मा, के0एल0 1997. *भारत में ग्रामीण समाज,* जयपुर : रावत पब्लिकेशन.